Shortage of Tyres

+

*421. **Shri Maurya:**
Dr. Ram Manohar Lohia:
Shri Kishen Pattnayak:
Shri Ram Sewak Yadav:
Shri Madhu Limaye:
Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Bhagwat Jha Azad:
Shri Sonavane:
Shri Raghunath Singh:
Shri Y. D. Singh:
Shri Onkar Lal Berwa:
Shri Kashi Ram Gupta:

Will the Minister of **Industry** be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to the acute shortage of automobile tyres in the country;

(b) whether Government have received any memorandum from the Transporters' Union of Delhi in this connection; and

(c) if so, the action taken to provide them with their necessary requirements of tyres?

The Minister of State in the Ministry of Industry (Shri Bibudhendra Misra): (a) and (b). Yes, Sir.

(c) The complaint of shortage has been mainly about the Nylon Cord tyres and not about the other varieties. The production of this variety of tyre has been very low due to the limited imports of nylon cord. The Delhi Transporters' Association and tyre manufacturers have agreed to evolve a workable arrangement so as to give the desired relief to users.

श्री मौर्य : श्रीमन्, टायर्स के इम्पोर्ट पर प्रतिबन्ध है लेकिन ऐयर इंडिया इंटरनेशनल के द्वारा कुछ विशेष बड़े व्यक्ति टायर लाये हैं और उस पर कस्टम ने ऐतराज़ भी किया है तो उस पर क्या कोई रोकथाम की गई है ?

Shri Bibudhendra Misra: I cannot answer this question. Only the Customs people can answer this question. I have no knowledge about it.

श्री मौर्य : श्रीमन्, यह जो टायरों की कमी है, इसकी ज़रूरत कितनी है और कमी कितनी है, इसका कुछ रेशियो क्या मंत्री महोदय दे सकेंगे और उस कमी को कितने दिनों में वह पूरा करने का निश्चय करते हैं? कितनी आवश्यकता है और कितना इस समय दे पा रहे हैं कितनी कमी है और उस कमी के अनुपात को कितने दिनों में पूरा कर लेंगे ?

Shri Bibudhendra Misra: There is absolutely no shortage of tyres in the country today. The production is more than the demand, and there has been export also.

The Minister of Industry (Shri D. Sanjivayya): May I add that the production was 2·59 million numbers in 1965, whereas the demand was 2·5 million? Therefore, we are surplus, and we are exporting to the extent of 80,730 tyres. This was the figure in 1965-66.

Mr. Speaker: With the greatest respect, I might just bring to the notice of the hon. Minister that difficulty is still being experienced by the users.

Shri D. C. Sharma: And very much so. It is not only the transporters but we also find it difficult to get tyres.

श्री मौर्य : अध्यक्ष महोदय . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये। आप ने दो सवाल कर लिये। यह सवाल मैं ने पूछा है ।

श्री मौर्य: इन मिनिस्टरों की रोकथाम कीजिये यह सत्य को दबाते हैं ?

Shri D. Sanjivayya: It is a fact that despite our surplus production there are complaints. These complaints have been looked into. There was a meeting arranged in our Ministry on the 4th August, 1966 between the manufacturers and the users. They have come to a certain arrangement. We will watch the situation for a month or two; if it does not improve,

we will have to take some other steps, because having surplus, if we find difficulties in securing them, it is a serious matter.

श्री भागवत झा आजाद : यह प्रसन्नता की बात है कि माननीय मंत्री जी ने यह कहा है कि देश में टायर का उत्पादन हमारी आवश्यकता से अधिक हो गया है और हमारा निर्यात भी बढ़ रहा है । उन्होंने उत्पादक और उपभोक्ताओं की मीटिंग भी बुलाई है, और भी बहुत से स्टेप्स लिये हैं । मैं जानना चाहता हूं कि इन तमाम बहादुरी के कामों के बाद भी आज बाजार में टायर क्यों नहीं मिलते और अगर मिलते हैं तो ऊंचे दामों पर क्यों मिलते हैं, और सरकार आज भी टायर को राशन में क्यों रक्खे हुए है । आज क्या कठिनाइयां हैं, वितरण की, घूस की या ईमानदारी की कमी थी ।

Shri D. Sanjivayya: Naturally, the difficulty has arisen on account of the fact that the dealers have not properly performed their duties. That is why in the meeting held recently it has been understood and agreed that the tyres available with the dealers are to be made known to the dealers' association. The operators' union will inform the dealers' association about the demand and the individual operatprs will be directed to specific dealers for getting their supplies. This will be watched for a month or two and if the situation does not improve, we will have to take some other measures.

श्री रघुनाथ सिंह : माननीय मंत्री जी का जो उत्तर था वह बड़ा सुन्दर था, लेकिन वाक्या यह है कि अगर आप दिल्ली में टायर खरीदने जायें तो बिना ब्लैक मार्केट का रुपया दिये आप को टायर नहीं मिल सकता । एक जीप मैं ने भी डिफेन्स से खरीदी । उस के लिये मैं खुद टायर खरीदना चाहता था। लेकिन उस के लिये हम से ड्योढ़े दाम मांगे गये । इसलिये जो फैक्ट्स हों उन पर मेहरबानी कर के ध्यान दीजिये ताकि चीज ठीक से मिल सके कंज्यूमर्स को ।

अध्यक्ष महोदय : इस के बारे में दो दफ़े कहा जा चुका है ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : मैं जानना चाहता हूं कि अवमूल्यन के बाद टायर पर कितनी रकम बढ़ी है और टायर का निर्यात करने में कितनी रकम घटी है ।

Shri D. Sanjivayya. There has been no increase in the prices of tyres after devaluation.

श्री ओंकार लाल बेरवा : जब रुपये का मूल्य घट गया है तो निर्यात का मूल्य भी उसका घट गया होगा । रुपये के दाम अब 65 पैसे हो गया है ।

Mr. Speaker: How much have we suffered in our exports of tyres due to devaluation?

Shri D. Sanjivayya: That I will not be able to say.

The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah): They will go up.

श्री म० ला० द्विवेदी : मैं जानना चाहता हूं कि इस बात में कहां तक सचाई है कि टायर के मैनुफैक्चरर्स के लिये जो विदेशी रबर आता था इम्पोर्ट कर के उस को 40 प्रतिशत कम कर दिया गया है, जिस के कारण कारखाने ठप्प पड़े हैं और काम ठीक से नहीं चल रहा है और इसी लिये टायरों की शार्टेज है । यदि यह सत्य है तो रबर का कोटा रेस्टोर करने में क्या दिक्कत है ।

श्री मनुभाई शाह : रबर कोटा बिल्कुल कम नहीं किया गया है । इस को लिब्रला-इज्ड इम्पोर्ट पालिसी के अन्दर इंडस्ट्री का स्टेट्स दिया गया है । रा मैटीरियल की कोई भी कमी नहीं है ।

There are pockets of scarcity as far as availability of tyres in concerned which my hon. colleague is looking into. We shall further look into it so that the local problem is solved.

श्री गुलशन : मंत्री महोदय ने अभी बतलाया कि देश में टायर के उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है और जितनी हमारी जरूरत है वह पूरी होती है । क्या मैं जान सकता हूं कि क्या सरकार का ध्यान इस ओर गया है कि टायर की कीमत बाजार में 1 हजार रु० है । फिर भी वह नहीं मिलता है । जब उसकी कीमत इतनी बढ़ी है और उस का उत्पादन भी बढ़ा है तब उस को नार्मल रेट पर क्यों नहीं रक्खा गया । क्या सरकार के ध्यान में यह बात है कि इस की इतनी कमी है ।

अध्यक्ष महोदय : दो दफ़े इस सवाल को किय जा चुका है और जवाब आ चुका है।

Export of Coconut

\+

***422. Shri Yashpal Singh:**
Shri Liladhar Kotoki:
Shri R. Barua:

Will the Minister of **Commerce** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that large scale consumption of green caconut in different parts of the country is "suicidal" for India as it declines export earnings to a great extent; and

(b) if so, whether Government propose to ban the cutting of green coconut like many other countries, such as Brazil?

The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah): (a) Yes, Sir.

(b). We have no information. for Brazil and other countries. For the present, Government have no intention to ban such cutting, though it is true that it is an undesirable practice.

श्री यशपाल सिंह : आप ने जो अवांछनीय की बात कही है तो शायद ब्राजिल जैसे मुल्कों में न हो लेकिन हमारे यहां कोई मंगल मुहूर्त बग़ैर नारियल के नहीं हो सकता । हर मंगल मुहूर्त पर नारियल पेश करना पड़ता है । तो हम किस बेसिस पर इस सेकूलर स्टेट में इस को अवांछनीय कह सकते हैं ।

श्री मनुभाई शाह : आप ने कहा कि बैन क्यों नहीं करते हैं । जो आप ने पूछा उसका जवाब मैं ने दिया कि हम गलत समझते हैं फिर भी बैन नहीं कर र हैं ।

श्री यशपाल सिंह : नारियल पक जाने के बाद भी निर्यात से हम को जितनी विदेशी मुद्रा मिल सकती है उस से हम कमी को पूरा कर सकते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : यह तो आप का सजेशन है, आप इन्फार्मेशन क्या चाहते हैं ? मंत्री महोदय ने कहा कि उन का कोई इरादा बैन करने का नहीं है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या मंत्री महोदय यह बतला सकेंगे कि हम ने पिछले साल कितना फ़ारेन एक्सचेन्ज लिया है ।

श्री मनुभाई शाह : हम ने खोया है । जब इस की कमी हो जाय तो न हम इम्पोर्ट के बग़ैर सेल्फ़ सफ़िशिएन्ट हो सकते हैं और न एक्सपोर्ट कर सकते हैं ।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा : क्या यह बात सही है कि बहुत सी बीमारियों में मरीजों के लिये ग्रीन कोकोनेट का पानी प्रेस्क्राइब किया जाता है । ऐसी हालत में ग्रीन कोकोनेट के काटने पर बैन लगाने के सम्बन्ध में जो लीगल कदम उठाये जायेंगे उन के परिणाम स्वरूप एक बड़ी मशीनरी क्रिएट करनी पड़ेगी, जिस पर बहुत एक्सपेन्डिचर होगा, लेकिन तब भी वह मशीनरी डोर टू डोर वाच करने में असमर्थ रहेगी ।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने सारी बात बतला दी है ।

Shri Warior: What is the quantity of coconut exported from India?

Shri Manubhai Shah: None. We are not exporting green coconuts barring a small number.